

शिक्षा विभाग में कार्यरत जेई इंद्र कुमार ने हरिभूमि को बताया कि जिला के तीन स्कूलों का नया भवन बनेगा। इसके लिए शिक्षा विभाग ने राशि मंजूर कर दी है। उन्होंने बताया कि राजकीय कन्या प्राथमिक पाठशाला शिवनगर के नए भवन के लिए एक करोड़ 73 लाख मंजूर किए हैं। जीएमएस निम्बहेड़ा के लिए एक करोड़ 60 लाख और जीजीपीएस कमनियाँ के लिए एक करोड़ 71 लाख की राशि मंजूर हुई है। इस राशि में प्रत्येक स्कूल में आठ-आठ कमरे, तीन-तीन शौचालय, बरामदे, कीचन तैयार होगी। निम्बहेड़ा स्कूल का चारदीवारी है। बाकी शिवनगर व कमनियाँ स्कूल का चारदीवारी का निर्माण भी होगा। टेंडर पोर्टल पर अपलोड किया जा रहा है। अगले सप्ताह टेंडर लगाने की प्रक्रिया शुरू हो जाएगी।

विधायाचने ने कहा कि हरियाणा मुख्यमंत्री नरेंद्र सिंह सैनी के नेतृत्व में प्रदेश सरकार का महत्वाकांक्षी विधानमंडल क्षेत्र के विकास के लिए पूरी गंभीरता से कार्य कर रही है। क्षेत्र की जनता की ओर से रखी जा रही मांगों और समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर सरकार तब पहुँचाकर उनके समाधान का प्रयास करेगा जो रहा है। इस मौके पर आमोबी संसदीय प्रतिनिधि डालनवास, राज कपूर, लांबा, कैप्टन प्रवीण सिंह, दशरथ साहब, राजेंद्र लांबा, कैप्टन ज्ञानिराम, उमदे मास्टर, सुबेदार प्रवीण, धर्मेन्द्र मलिक, करतार सिंह, बारडा प्रतिनिधि पंचायत समिति सतनाली आदि प्राणीम मौजूद रहे।

सूरज डिग्री कॉलेज के 2 विद्यार्थी यूनिवर्सिटी की टॉप 10 में शामिल



महेन्द्रगढ़। ईंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर द्वारा एमए अंग्रेजी के चौथे सेमेस्टर का परिणाम घोषित किया गया, जिसमें सूरज कॉलेज के दो विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय की टॉप 10 मेरिट सूची में अपना नाम दर्ज कराया। जिसमें एमए इंग्लिश चौथे सेमेस्टर की छात्रा मोनिका शेखावत पुत्री नरेश कुमार सतनाली ने 8.69 एसजीपीए लेकर पूरे विश्वविद्यालय में पांचवी एवं कॉलेज में प्रथम स्थान प्राप्त किया। वैभवी पुत्री राजेश कुमार भिवानी ने 8.46 एसजीपीए लेकर विश्वविद्यालय में आठवा स्थान एवं कॉलेज में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

इसी क्रम मे वर्षा पुत्री उमेश सिंह ग्राम नांगल मोहनपुर ने 8.31 एसजीपीए, ज्योति शर्मा पुत्री गिल्लू राम ग्राम देवास ने 8.15 एसजीपीए, सपना यादव पुत्री महिपाल यादव ग्राम मंडलाना 7.92 एसजीपीए प्राप्त किया। वहीं कॉलेज के अधिकांश विद्यार्थी प्रथम श्रेणी के साथ उत्तीर्ण होने में सफल रहे। कॉलेज प्राचार्य डॉ. सुधाकर गुप्ता ने बताया कि कॉलेज का श्रेष्ठ परिणाम विद्यार्थियों के कठोर परिश्रम व शिक्षकों के मार्गदर्शन का परिणाम है। उन्होंने बताया कि कॉलेज के विद्यार्थी किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है।

श्रीकृष्ण स्कूल में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम

हरिभूमि न्यूज ॥ नारनौल

सीबीएसई सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस गुरुग्राम के तत्वावधान में श्रीकृष्ण सीनियर सेकेंडरी स्कूल भुंगरका में कहानी-कथन को शिक्षण-पद्धति के रूप में प्रयोग विषय पर एक दिवसीय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसका उद्देश्य शिक्षकों को कहानी-कथन के माध्यम से कक्षा-कक्ष में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी, रोचक एवं विद्यार्थी-केंद्रित बनाने के लिए नई तकनीकों से परिचित कराना रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के प्राचार्य वेदपाल यादव, चेयरमैन एडवोकेट राजपाल यादव व उप-प्राचार्य संदीप खेरवाल ने मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यशाला में सीबीएसई रिसोर्स पर्सन मनीषा वालिया व कुशाल पाल सिंह यादव ने शिक्षकों को बताया कि कहानी-कथन केवल मनोरंजन का माध्यम

गीतांजलि यादव ने नेट परीक्षा पास की

महेन्द्रगढ़। शहर के कृष्णा कॉलेजी निवासी गीतांजलि यादव ने ज्वाइंट सीसीआईआर-आर-यूजीसी नेट परीक्षा में लाइफ साइड्स विषय से जूनियर रिकार्ड फेलोशिप (जेआरएफ) विलय की है। गीतांजलि ने परीक्षा में 91वीं रैंक प्राप्त की है। उनकी सफलता पर पिता रिचार्ड प्रिंसिपल डॉ. सुरेंद्र सिंह, माता स्नेहलता, भाई हर्ष यादव, सुखवीर सिंह, सविता यादव, अरुण यादव व महावीर सिंह सहित परिवारजनों ने उन्हें बधाई दी। गीतांजलि ने परीक्षा की तैयारी अपने घर से ही स्टूड्यूब के माध्यम से की व अपनी कमियों को पहचानकर उन्हें करने पर विशेष ध्यान दिया।

14243 केसों का किया फैसला

हरिभूमि न्यूज ॥ नारनौल

हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से जारी दिशा निर्देशानुसार व जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की चेयरपर्सन एवं जिला व सत्र न्यायाधीश डॉ. रितु वाईके बहल के मार्गदर्शन में तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव एवं मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी नीलम कुमारी की देखरेख में नारनौल, महेन्द्रगढ़ व कनीना में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव एवं मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी नीलम कुमारी ने बताया कि इस लोक अदालत में अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश हर्षाजी चौधरी व सोनिका, सिविल जज जूनियर डिवीजन निशा, राकेश कुमार व आदित्य सिंह यादव की बेंचों ने नारनौल, सिविल जज जूनियर डिवीजन पीयूष की बेंच

जागरूकता

रोटरी क्लब रायल्स ने लगाया महिलाओं के लिए मैमोग्राफी कैंप

■ स्तन कैंसर की समय रहते पहचान होने पर उपचार की संभावनाएं बेहतर

हरिभूमि न्यूज ॥ नारनौल

रोटरी क्लब ऑफ रायल्स की ओर से श्रीमती हस्ती देवी जन कल्याणार्थ समिति कनीना के सहयोग/एसोसिएट के साथ महिलाओं के स्वास्थ्य और सशक्तिकरण के उद्देश्य से आरपीएस स्कूल में मैमोग्राफी कैंप का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य महिलाओं में स्तन कैंसर के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा

बीमारी की समय रहते जांच तथा प्रारंभिक पहचान को प्रोत्साहित करना रहा। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि डॉ. पवित्रा राव चेयरपर्सन आपीएस ग्रुप ने रोटरी क्लब रायल्स व श्रीमती हस्ती देवी जन कल्याणार्थ समिति की इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि महिलाओं के स्वास्थ्य की नियमित जांच पूरे परिवार के स्वस्थ और सुरक्षित भविष्य की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। स्तन कैंसर की समय रहते पहचान होने पर उपचार की संभावनाएं बेहतर होती हैं। ऐसे स्वास्थ्य जांच एवं जागरूकता

मुनिराजों की सेवा व उनके बताए मार्ग पर चलने से जीव मोक्षमार्ग की ओर अग्रसर आवश्यक परिणामी भावना से आत्मस्वरूप पहचानने का संदेश



नारनौल। पूजा-अर्चना करते जैन धर्म के मुनि।

फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ॥ नारनौल

धर्मनगरी स्थित 1008 श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर के प्रांगण में परम पूज्य 108 आचार्य आरजव सागर महाराज के शिष्य मुनिश्री महंत सागर, मुनि विभोर सागर व मुनि सानंद सागर महाराज के सानिध्य में श्री लोक कल्याण महामंडल विधान का आयोजन जारी है। विधान का निर्देशन पंडित ऋषभ जैन शास्त्री धिरोर मैनपुरी ने

किया। धार्मिक आयोजन के अंतर्गत मंगलवार को चौदहवीं आवश्यक परिणामी भावना के माध्यम से श्रद्धालुओं को आत्मकल्याण और मोक्षमार्ग का संदेश दिया गया। मुनिराज ने आवश्यक परिणामी भावना का मर्म समझाते हुए कहा कि यह भावना मनुष्य को जीवन में आवश्यक कर्तव्यों और आत्मकल्याण के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। श्रावक और मुनिराज के आवश्यक अलग-

अलग होते हैं, लेकिन इनका मूल उद्देश्य आत्मशुद्धि और सच्चे सुख की प्राप्ति है। मुनिराजों की सेवा और उनके बताए मार्ग पर चलने से जीव मोक्षमार्ग की ओर अग्रसर होता है। दिगंबर मुनिराज स्वयं भी साधना के माध्यम से परम सिद्ध बनने की दिशा में आगे बढ़ते हैं। उन्होंने श्रद्धालुओं को अपने आत्मस्वरूप को पहचानने और आत्मचिंतन करने की विधि सरलता से समझाई।

सांस्कृतिक अहीरवाल एक सार्थक प्रयास विषय पर विचार गोष्ठी

■ कनीना के एआईटी कॉलेज में कार्यक्रम, संस्था के निदेशक सत्यव्रत शास्त्री रहे मुख्य वक्ता

हरिभूमि न्यूज ॥ नारनौल

सांस्कृतिक अहीरवाल संस्था की कनीना इकाई की ओर से शनिवार सांस्कृतिक अहीरवाल एक सार्थक प्रयास विषय पर प्रबुद्ध नागरिक विचार गोष्ठी का आयोजन एआईटी कॉलेज में किया गया। कार्यक्रम का संयोजन खण्ड संयोजक सत्येंद्र शास्त्री व साहित्य प्रमुख शमशेर कोसलिया ने किया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता संस्था के निदेशक सत्यव्रत शास्त्री उपस्थित रहे। अध्यक्षता नेता अतरलाल ने की।

इस अवसर पर वक्ता जगदेव यादव ने कहा कि सांस्कृतिक अहीरवाल के इतिहास के बारे में हमारे पास जो जानकारी है वो हमें अपनी युवा पीढ़ी को साझा करनी चाहिए ताकि हमारी सांस्कृतिक धरोहर सदियों तक बनी रहे एवं हमारी आने वाली पीढ़ी को अपने

धर्मसभा में मुनिराजों ने दिए प्रवचन, युवाओं को संस्कारों से जोड़ने व बुजुर्गों के सम्मान का आह्वान

मनुष्य को क्रोध के बजाय समता का भाव अपनाना चाहिए: मुनि विभोर

मुनि विभोर सागर महाराज ने कहा कि इच्छानुसार हर कार्य करना उचित नहीं होता। मनुष्य को क्रोध के बजाय समता का भाव अपनाना चाहिए। अत्यधिक क्रोध व्यक्ति के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डाल सकता है। वहीं मुनि सानंद सागर महाराज ने वर्तुस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस अवधि में जैन मुनि एक स्थान पर रहकर पूजा-अर्चना, स्वाध्याय और धर्मोपदेश करते हैं। इस दौरान श्रद्धालुओं को धर्म साधना का विशेष अवसर मिलता है। धर्मसभा में महिला, पुरुष, युवा और बच्चों ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर धर्मलाम अर्जित किया।

युवाओं को धर्म और संस्कारों से जोड़कर ही समाज को बनाया जा सकता है सशक्त

प्रवक्ता सुरेंद्र जैन ने बताया कि धर्मसभा में मुनि महंत सागर, मुनि विभोर सागर व मुनि सानंद सागर महाराज के प्रवचन हुए। इन्हें सुनने के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि सागर महाराज ने कहा कि युवाओं को धर्म और संस्कारों से जोड़कर ही समाज व राष्ट्र को सशक्त बनाया जा सकता है। जिस प्रकार बच्चों को नियमित रूप से स्कूल भेजा जाता है, उसी प्रकार उन्हें प्रतिदिन जैन मंदिर भी भेजना चाहिए। परिवार के प्रत्येक सदस्य को मंदिर जाकर धार्मिक आयोजनों में श्रद्धापूर्वक भाग लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि मकान चार दीवारों से बन जाता है, लेकिन घर को बसाने के लिए धैर्य, समझ, प्रेम और बुद्ध-बुजुर्गों का सम्मान जरूरी है।



नारनौल। विचार गोष्ठी में हिस्सा लेते हुए।

फोटो : हरिभूमि

इतिहास का ज्ञान हो। उन्होंने डिजिटल युग की तरफ ध्यान कर्वाते हुए अपनी सांस्कृतिक विरासत एवं धरोहरों की जानकारी सोशल प्लेटफार्म पर भी बढ़ाने का निवेदन किया। मुख्य वक्ता एवं संस्था के निदेशक सत्यव्रत शास्त्री ने बताया कि अहीरवाल क्षेत्र का इतिहास महाभारत कालीन आभीर गणराज्य से आरंभ हुआ है अनेक प्रकार के उतार चढ़ाव के बावजूद भी एक लंबी ऐतिहासिक यात्रा रही है। उन्होंने कहा कि अहीरवाल की भूमि ऋषियों मुनियों की भूमि रही है अनेक युगपुरुषों ने अपनी कर्तव्य परायणता से न केवल मातृभूमि को गौरवान्वित किया है बल्कि विश्व

स्तर पर अहीरवाल क्षेत्र के नाम का लोहा मनवाया है। फिर भी कहीं न कहीं वर्तमान पीढ़ी अपने अहीरवाल क्षेत्र के पूर्ण इतिहास की जानकारी से वंचित नजर आती है। इसका मूल कारण भी प्रबुद्ध वर्ग द्वारा अपने, अपने गांव के व क्षेत्र के इतिहास के बारे में जानकारी पीढ़ी को न बताना है। कार्यक्रम में डा. अजय यादव एसडीओ, दयानंद यादव, महावीर पहलवान, सतीश आर्य, रामेश्वर दयाल शास्त्री, मनोज करीरा, प्रकाश आर्य सेहलंग ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम में जिला संयोजक सतीश यादव ने आंगतुकों का स्वागत किया तथा विनोद एडवोकेट ने सभी धन्यवाद ज्ञापित किया।

न्यूज डायरी



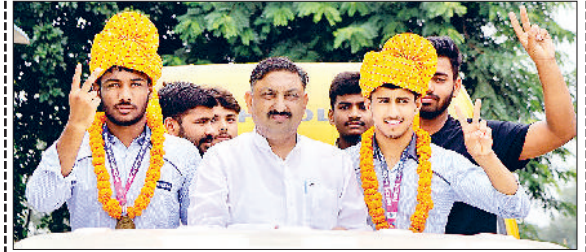
बीकेएन स्कूल सिहमा में माता-पिता ने ली बच्चों की रिपोर्ट

नारनौल। बीकेएन स्कूल सिहमा में अभिभावक शिक्षक बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें अभिभावकों ने स्कूल पहुंचकर अपने-अपने बच्चों की रिपोर्ट ली और उनके सर्वांगीण विकास के लिए चर्चा की। संस्था के प्राचार्य राजेश ने बताया कि आज का युग प्रतिस्पर्धा का युग है। बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए माता-पिता और अध्यापकों में तालमेल जरूरी है। अभिभावक शिक्षक बैठक का उद्देश्य बच्चों की गतिविधियों के बारे में माता-पिता अध्यापक से जान सके और अध्यापक बच्चों के माता-पिता से बच्चों की गतिविधियों के बारे में जान सके। जिसमें दोनों मिलकर बच्चों की कमियां व अच्छाइयों के बारे में पता लगा सके और उनकी कमियों को दूर किया जा सके। संस्था के चेयरमैन विजय सिंह ने बैठक में पहुंचने वाले सभी अभिभावकों का धन्यवाद किया।



यदुवंशी डिग्री कॉलेज में फ़ैशर्स का किया स्वागत

महेन्द्रगढ़। यदुवंशी डिग्री कॉलेज में नए शैक्षणिक सत्र का शुभारंभ उत्साह, उमंग एवं सांस्कृतिक ऊर्जा के साथ किया गया। इस दौरान कॉलेज परिसर में आयोजित कार्यक्रम में नवप्रवेशित विद्यार्थियों का गर्मजोशी से स्वागत करते हुए उन्हें कॉलेज परिवार का हिस्सा बनने पर शुभकामना दी गई। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, मनोरंजक गतिविधियों एवं प्रतिभा प्रदर्शन के माध्यम से अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। चेयरमैन एवं पूर्व विधायक राव बहादुर सिंह ने कहा कि कॉलेज जीवन विद्यार्थी के भविष्य की नींव मजबूत करने का महत्वपूर्ण समय होता है। विद्यार्थी अपने लक्ष्य को निर्धारित कर निरंतर मेहनत करें और सफलता प्राप्त करने के साथ-साथ अपने माता-पिता एवं संस्थान का नाम रोशन करें। वाइस चेयरमैन एडवोकेट करण सिंह, चेयरपर्सन संगीता यादव, तनीष राव, गुप डायरेक्टर विजय सिंह, डॉ. प्रदीप यादव एवं प्राचार्य बाबूराम ने भी विद्यार्थियों को नए सत्र की शुभकामनाएं दीं और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।



आरआरसीएम स्कूल के विद्यार्थियों का शानदार प्रदर्शन

महेन्द्रगढ़। आरआरसीएम स्कूल के विद्यार्थियों ने राज्य स्तरीय कुश्ती प्रतियोगिता में अपनी खेल प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विद्यार्थ्य और क्षेत्र का नाम रोशन किया है। विद्यालय के उज्ज्वल खिलाड़ियों ने कड़ी प्रतिस्पर्धा के बीच शानदार खेल कोशल का प्रदर्शन दिखाते हुए पदक अपने नाम किए, इसमें प्रतिस्पर्धा के 60 किलोग्राम भार वर्ग में जतिन पुत्र वीर सिंह गांव अखलावास ने बेहतरीन कुश्ती कोशल का प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक प्राप्त किया और अपनी खेल प्रतिभा का लोहा मनवाया। वहीं प्रतियोगिता के 74 किलोग्राम भार वर्ग में शिवम पुत्र भूपेंद्र गांव बाघोत ने भी शानदार प्रदर्शन करते हुए रजत पदक पर अपना कब्जा जमाया। विद्यालय चेयरमैन राव रोशन लाल ने बताया कि हमारे विद्यालय में खेल प्रशिक्षण की उच्च स्तरीय व्यवस्थाएं हैं, यहां प्रसिद्ध खेल प्रशिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को विभिन्न खेल का नियमित प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। इसके साथ ही उन्होंने सभी विजेता खिलाड़ियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर और बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया।

वैक्सीन के दावों के बावजूद लंपी का कहर: राव नरेंद्र

नारनौल। हरियाणा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह ने प्रदेश में लंपी वायरस के बढ़ते संक्रमण और पशुओं की लगातार रही मौतों को लेकर भाजपा सरकार पर लोख हमला बोला है। उन्होंने कहा कि सरकार कांगजी में 90 फीसदी से अधिक पशुओं का टीकाकरण पूरा होने का दावा कर रही है, लेकिन गांवों व गोशालाओं में पशुपालकों के पशु बीमारी से जूझ रहे हैं और मर रहे हैं। यह स्थिति सरकार के दावों और जमीनी हकीकत के बीच भारी अंतर को उजागर करती है। राव नरेंद्र सिंह ने कहा कि महेन्द्रगढ़ में पशुपालक शत-प्रतिशत वैक्सीनेशन के सरकारी दावे पर सवाल उठा रहे हैं, दो गोशालाओं में 27 पशुओं के लंपी से पीड़ित पाए जाने और छह पशुओं की मौत की बात सामने आ रही है।



30वां गणेश उत्सव : कल से शुरू होंगे कार्यक्रम



नारनौल। गणेश चतुर्थी पर शहर में भगवान श्री गणेश उत्सवों का आयोजन किया जाएगा। पुस्तक बाजार स्थित भगवान सत्यनारायण मंदिर प्रांगण में 14 सितंबर से गणेश उत्सव शुरू होंगे। श्री गणेश उत्सव मंडल पुस्तक बाजार की ओर से भगवान सत्यनारायण मंदिर प्रांगण में 14 से 25 सितंबर तक 30वां वार्षिक महोत्सव मनाया जाएगा। मंडल के प्रधान आनंद मराठा ने बताया कि 14 सितंबर को पंडित देवकी नंदन शास्त्री द्वारा विधि-विधान से भगवान श्री गणेश जी की स्थापना करवाई जाएगी। इस बार महाराष्ट्र के लालबाग से लाई गई भगवान श्री गणेश जी की अर्घ्य प्रतिमा मुख्य आकर्षण रहेगी, जिसमें गणपति जी को भगवान विष्णु के घूमेते हुए चक्र पर विराजमान दिखाया गया है। महोत्सव के दौरान प्रतिदिन रात्रि भव्य आरती होंगी। 19 सितंबर को रक्तदान शिबिर, 20 सितंबर को जागरण एवं झांकियां तथा 23 सितंबर को विशाल अमृतमयी मंडारा आयोजित किया जाएगा।

एसडीएम ने राजावास स्कूल का किया औचक निरीक्षण



महेन्द्रगढ़। एसडीएम योगेश सैनी ने शुक्रवार को उपमंडल के गांव राजावास स्थित राजकीय उच्च विद्यालय का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने स्कूल की शैक्षणिक गतिविधियों, स्वच्छता और मिड डे मील योजना के तहत बच्चों को दिए जाने वाले भोजन की गुणवत्ता का गहन जांचाया लिया। निरीक्षण के दौरान एसडीएम सीधे स्कूल की रसोई में पहुंचे और वहां रखे राशन, खाद्यान्न के स्टॉक और साफ-सफाई की बारीकी से जांच की। भोजन की शुद्धता और स्वाद को परखने के लिए एसडीएम ने मिड-डे मील खाया। उन्होंने भोजन की गुणवत्ता पर सतर्क व्यक्त किया और स्कूल स्टाफ को निर्देश दिए कि बच्चों को हमेशा पोष्टिक, ताजा और मेन्वु के अनुसार ही भोजन परोसा जाए। भोजन की जांच के बाद एसडीएम ने विभिन्न कक्षाओं में जाकर छात्रों से संवाद किया।

विधायक ने दुलोठ अहीर तालाब का किया निरीक्षण



महेन्द्रगढ़। क्षेत्र में जल संरक्षण एवं सिंचाई व्यवस्था को लेकर विधायक कंवर सिंह यादव लगातार क्षेत्र का दौरा कर व्यवस्थाओं का जायजा ले रहे हैं। शनिवार सुबह विधायक कंवर सिंह यादव ने सिंचाई विभाग के कार्यकारी अभियंता आशुतोष यादव सहित विभाग के अन्य अधिकारियों की टीम के साथ गांव दुलोठ अहीर स्थित तालाब का औचक निरीक्षण किया। विधायक ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि जल स्रोतों की नियमित निगरानी की जाए और जहां भी किसी प्रकार की कमी या समस्या सामने आए, उसका प्राथमिकता के आधार पर समाधान किया जाए।

श्रीगणेश उत्सव की तैयारी, बैठक में चर्चा

नारनौल। शहर में गांधी बाजार के पास स्थित गणपति प्लाजा मार्केट में भगवान श्रीगणेश का वार्षिक उत्सव धूमधाम से मनाया जाएगा। गणेश उत्सव में संपूर्ण कार्यक्रम की जानकारी देते हुए व्यापारी किशन वशिष्ठ ने बताया कि 14 सितंबर को मां चामुंडा देवी मंदिर से भव्य शोभा यात्रा प्रारंभ होकर गणपति प्लाजा, गांधी बाजार उत्सव स्थल पर पहुंचेगी और यहां गणेशजी के मंत्र उच्चारण के साथ भव्य स्थापना होगी। लगातार 10 दिन चलने वाले इस उत्सव को लेकर बैठक में चर्चा की गई। इस बैठक में अशोक सैनी, नवनीत चौधरी, गगन सोनी, सरदार मनिंदरजीत जी, दीपक सोनी, सुभाष सैनी, राकेश माडा, राहुल सोनी, मोहित नूनीवाला, राजन डोरा, देवेंद्र खत्री, अमन सैनी, सुनील कटारिया, सुरेंद्र जुनैर, पुरुषोत्तम सैनी, अशोक लाला, डॉ. नीलू जैन, दिलीप, पंकज जैन, नरेश सैनी, नरेश सैनी, कविंद्र पाहुजा, मनोज गर्ग, सोनू सोनी, केशव सोनी मौजूद रहे।

सार्वजनिक सूचना

राजकीय प्राथमिक पाठशाला सलूनी (15205) खंड अटेली जिला महेन्द्रगढ़ के जर्जर भवन पांच कमरों को हटाने की खुली बोली बार मंगलवार 15 सितंबर 2026 को सुबह 11:00 स्कूल प्रांगण में लगाई जाएगी। नियम व शर्तों मौके पर बनाई जाएगी। स्कूल की एसएमसी फैसलों का अंतिम निर्णय होगा। इच्छुक बोली दाता अपनी सिक्वोटीटी लेगी रूपए 10000/- 15 सितंबर 2026 को 8 से 9:30 बजे तक जमा करने के उपरांत ही बोली में भाग ले सकते हैं। विद्यालय प्रबंधन समिति राजकीय प्राथमिक पाठशाला सलूनी (अटेली)



नारनौल। कैम्प में सेवाएं देने वाले चिकित्सक व अन्य।

फोटो: हरिभूमि

शिविर समाज के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। रोटरी क्लब रायल्स के

प्रधान रोटेरियन दिनेश भागवत ने कहा कि महिलाओं का स्वास्थ्य एक

स्वस्थ परिवार और मजबूत समाज की नींव है। हमारा प्रयास है कि

37 दिन बाद चली झाड़ू, शहर को फिर से साफ-सुथरा बनाने में जुटे कर्मचारी

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ नारनौल

करीब 37 दिनों से चली आ रही नगर पालिका कर्मचारी संघ की हड़ताल शनिवार को समाप्त हो गई। मुख्यमंत्री नाथन सिंह सैनी के आश्वासन के बाद शुक्रवार देर शाम कर्मचारी नेताओं और सरकार के बीच हुई वार्ता में बनी सहमति के बाद नगर पालिका कर्मचारी संघ इकाई नारनौल एवं अग्निशमन विभाग के कर्मचारियों ने आंदोलन खत्म कर काम पर लौटने का निर्णय लिया।

हड़ताल के कारण पिछले सवा महीने से शहर की नियमित सफाई व्यवस्था प्रभावित थी और जगह-जगह गंदगी जमा हो गई थी।



नारनौल। शहर में झाड़ू लगाते सफाई कर्मचारी तथा कर्मचारियों को संबोधित करते प्रांतीय कैशियर महेंद्र संगेलिया।

कर्मचारियों के काम पर लौटने से शहरवासियों को राहत मिलने की उम्मीद जगी है। शनिवार सुबह छह बजे नगर परिषद नारनौल के प्रांगण में कर्मचारी संघ की बैठक हुई। इसकी



मुख्यमंत्री के आह्वासन के बाद कर्मचारियों ने खत्म किया आंदोलन, 16 मांगों पर सहमति का दावा, सुबह छह बजे बैठक कर काम पर लौटे

फोटो : हरिभूमि

अध्यक्षता इकाई प्रधान भूपेंद्र सारवन ने की। बैठक में राज्य कमेटी और सरकार के बीच हुई वार्ता में बनी सहमति से कर्मचारियों को अवगत कराया गया। कर्मचारी नेताओं के

अनुसार वार्ता में उनकी करीब 16 मांगों पर सहमति बनी है। राज्य कमेटी के निर्देश पर हड़ताल समाप्त कर अब सफाई व्यवस्था को जल्द सामान्य करने का निर्णय लिया गया।

इकाई प्रधान भूपेंद्र सारवन ने कहा कि राज्य कमेटी ने शहर को स्वच्छ बनाने के लिए 15 दिन का समय मांगा है, लेकिन नारनौल के कर्मचारी इससे भी कम समय में शहर को साफ-

सुथरा बनाने का प्रयास करेंगे। कर्मचारी पूरी मेहनत और तत्परता से सफाई अभियान में जुटेंगे, ताकि हड़ताल के दौरान प्रभावित हुई व्यवस्था को जल्द पटरी पर लाया जा सके। कर्मचारी नेताओं के अनुसार शुक्रवार शाम हरियाणा सरकार के साथ राज्य कमेटी की वार्ता हुई थी। इसमें कर्मचारियों की विभिन्न मांगों पर सकारात्मक बातचीत हुई और करीब 16 मांगों पर सहमति बनने की बात कही गई। मुख्यमंत्री के आश्वासन के बाद राज्य कमेटी ने हड़ताल समाप्त करने का निर्णय लिया, जिसके बाद नारनौल इकाई ने भी शनिवार सुबह बैठक कर आंदोलन खत्म करने की घोषणा कर दी।

सफाई व्यवस्था सामान्य करने की चुनौती

गौरतलब है कि शुक्रवार को ही नगर परिषद अधिकारियों ने कर्मचारियों को सोमवार से काम पर लौटने की चेतावनी दी थी। अधिकारियों ने कहा था कि ऐसा नहीं करने पर कर्मचारियों के खिलाफ निबंधन और सेवा समाप्ति जैसी कठोर कार्रवाई की जा सकती है। हालांकि इससे पहले ही सरकार और कर्मचारियों के बीच सहमति बनने के बाद हड़ताल समाप्त हो गई और कर्मचारी शनिवार से ही काम पर लौट आए। करीब 37 दिन तक सड़कों पर झाड़ू नहीं चलने और कूड़ा उठान प्रभावित रहने से शहर के कई हिस्सों में गंदगी जमा हो गई थी। अब कर्मचारियों के सामने इसे तेजी से हटाकर सफाई व्यवस्था सामान्य करने की चुनौती है।

मीटिंग में थे रहे मौजूद

नगर पालिका कर्मचारी संघ के राज्य कैशियर महेंद्र संगेलिया, जिला प्रधान राहुल सारवन, इकाई सचिव महेंद्र दास, इकाई कैशियर मनोज बोयत सहित कुष्ण नसीबपुर, महावीर प्रसाद, देवानंद, सुनील बोयत, रमाकांत, दीपक, राजेश, नीरज, रोशन, विनोद, कमल, रजनीश, जोगिंदर, पूनम, मनोज देवी, बबली, बबीता, सुनीता, ममता, मीनाक्षी, रेखा, लाजवंती, मंजू, सविता, निर्मला, उर्मिला सहित बड़ी संख्या में कर्मचारी एवं पदाधिकारी मौजूद रहे।



काम पर लौटे सफाई कर्मचारी

महेंद्रगढ़। प्रदेश में पिछले 36 दिनों से चली आ रही सफाई कर्मचारियों की हड़ताल आधिकार समाप्त हो गई। सरकार की ओर से कर्मचारियों की मांगों को मान लिए जाने के बाद सफाई कर्मचारी काम पर लौट आए। शुक्रवार को शहर की सड़कों और गलियों में झाड़ू चली तो लोगों ने राहत की सांस ली। लंबे समय से सफाई व्यवस्था ठप होने के कारण शहर के विभिन्न हिस्सों में गंदगी के ढेर लग गए थे और कई जगह गलियां कचरे से अटककर जाम हो गई थी। जानकारी के अनुसार महेंद्रगढ़ नगर पालिका में कुल 63 सफाई कर्मचारी हैं। इनमें 50 कच्चे कर्मचारी तथा 13 पक्के कर्मचारी शामिल हैं। इन कर्मचारियों के हड़ताल पर चले जाने के बाद नगर पालिका क्षेत्र में सफाई कार्य प्रभावित हो गया था। हालांकि कुछ वैकल्पिक व्यवस्थाओं को प्रयास किए गए, लेकिन शहर की नियमित सफाई व्यवस्था को पूरी तरह सुचारु नहीं किया जा सका।



भगवान विश्वकर्मा किसी एक जाति विशेष के नहीं : गांगड़ा

महेंद्रगढ़। राज्यसभा के पूर्व सांसद रामचंद्र गांगड़ा शनिवार को आगामी 17 सितंबर को महेंद्रगढ़ में प्रस्तावित राज्य स्तरीय भगवान विश्वकर्मा जयंती समारोह को सफल बनाने के लिए जयराम सदन में आयोजित कार्यकर्ता सम्मेलन में पहुंचे। उन्होंने कहा कि भगवान विश्वकर्मा किसी जाति विशेष के नहीं, बल्कि हम सभी के आराध्य हैं। उन्होंने सभी जाति और धर्म के लोगों के लिए समान रूप से कार्य किया, यही कारण है कि विश्वकर्मा ने लोग भगवान विश्वकर्मा को सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। उन्होंने कहा कि 17 सितंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जन्मदिन भी कार्यकर्ताओं द्वारा धूमधाम से मनाया जाएगा। उन्होंने कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि भगवान विश्वकर्मा जयंती पर मुख्यमंत्री नाथन सिंह सैनी द्वारा महेंद्रगढ़ में आयोजित किए जा रहे राज्य स्तरीय समारोह में अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर इसे ऐतिहासिक रूप से सफल बनाएं।



खेल युवाओं के सर्वांगीण विकास का सशक्त माध्यम: विधायक

सतनाली मंडी। गांव डालनवास में बाबा सांवत नाथ खेल प्रतियोगिता के शुभारंभ अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में महेंद्रगढ़ विधायक कंवर सिंह यादव ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की तथा रिबन काटकर खेल प्रतियोगिता का विधिवत उद्घाटन किया। इस दौरान खिलाड़ियों एवं गांवियों ने विधायक का फूल मालाओं व पगड़ी पहनाकर स्वागत किया। विधायक कंवर सिंह यादव ने कहा कि खेल हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। खेलों के माध्यम से युवाओं में अनुशासन, आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता तथा शारीरिक एवं मानसिक मजबूती का विकास होता है। खेल न केवल व्यक्ति को स्वस्थ रखते हैं, बल्कि युवाओं में आपसी भाईचारे, सहयोग और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना को भी मजबूत करते हैं। ग्राम पंचायत डालनवास की ओर से विधायक कंवरसिंह यादव को विकास कार्यों से संबंधित मांग पत्र भी सौंपा गया।



सेवा संकल्प अभियान को सफल बनाने में जुटी भाजपा

नारनौल। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सेवा, सुशासन और जनकल्याण के 25 वर्षों की यात्रा को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से भारतीय जनता पार्टी की ओर से चलाए जा रहे सेवा संकल्प अभियान को लेकर भाजपा जिला कार्यालय मनी कमल में मंडल की विशेष कार्यशाला आयोजित की गई। जिसकी अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष हेमंत चौबे ने की। बैठक में अभियान को मंडल स्तर से लेकर बुथ स्तर तक प्रभावी ढंग से पहुंचाने को लेकर विस्तार से मंथन किया गया तथा कार्यकर्ताओं को जिम्मेदारियां सौंपने की रणनीति पर चर्चा हुई। कार्यशाला में मुख्य वक्ता रमेश तंवर, मीडिया ऐनलिस्ट एवं पूर्व जिला अध्यक्ष एडवोकेट राकेश शर्मा तथा मंडल अध्यक्ष हेमंत चौबे ने कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। मुख्य वक्ता रमेश तंवर ने कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि 17 सितंबर से 17 अक्टूबर तक चलने वाले इस अभियान को केवल कार्यक्रम तक सीमित न रखते हुए इसे जनसंपर्क और जनसेवा का अभियान बनाया जाए।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना

जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नंबरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-

महेन्द्रगढ़ :- हरिभूमि कार्यालय, हुड़ा पार्क के सामने, डाक्टर भगत डेल अस्पताल वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, महेंद्रगढ़।
नारनौल :- सत्य प्लाजा, प्रथम तल, तरुण कलर लेब वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, नारनौल
फोन : 8295154800, 8295738500, 9253681005

बाजारों, मुख्य सड़कों और सार्वजनिक स्थानों पर दिनभर घूमते आवारा सांड अटेली में बेसहारा पशु से लोग परेशान, हादसों का बना डर



मंडी अटेली। अनाज मंडी में घूमते हुए बेसहारा पशु।

■ पशुओं को सुरक्षित स्थान उपलब्ध करवाकर समस्या का स्थायी समाधान करवाने की मांग

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ मंडी अटेली

अटेली में बेसहारा पशुओं की बढ़ती संख्या लोगों के लिए परेशानी का सबब बनी हुई है। बाजारों, मुख्य सड़कों और सार्वजनिक स्थानों पर दिनभर बेसहारा पशु घूमते नजर आते हैं। इनके कारण राहगीरों, दुकानदारों व वाहन चालकों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। कई बार सड़क के बीचोंबीच सांड खड़े रहने से यातायात भी प्रभावित होता है और वाहन चालकों को अचानक ब्रेक

लगाने पड़ते हैं। परेशानी तब और बढ़ जाती है, जब यह लड़ने लगते हैं और लोगों में इनका आतंक फैल जाता है। शहर वासियों के अनुसार झंडा चौक, अनाज मंडी, कस्बे के मुख्य मार्गों के अलावा रेलवे रोड पर भी बड़ी संख्या में आवारा सांड घूमते रहते हैं। बाजार क्षेत्र में भीड़ अधिक होने के कारण यहां इन सांडों से हादसे की आशंका भी रहती है। सांडों के आपस में भिड़ने की स्थिति में आसपास मौजूद लोगों में भगदड़ जैसी स्थिति पैदा हो जाती है। वहीं दोपहिया वाहन चालक इनके अचानक सामने आ जाने से दुर्घटना का शिकार हो सकते हैं। लोगों का कहना है कि बेसहारा पशु की समस्या को लेकर नगर पालिका प्रशासन से कई बार अवगत कराया

जा चुका है। उन्होंने अधिकारियों से मांग की कि अभियान चलाकर बेसहारा पशु को पकड़कर सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया जाए, लेकिन अवगत होने के बावजूद अभी तक समस्या का स्थायी समाधान नहीं हो पाया है। लोगों का आरोप है कि नगर पालिका के अधिकारी इस गंभीर समस्या को लेकर आंखें मूंदे बैठे हैं। दुकानदारों का कहना है कि बाजार में आने वाले ग्राहकों को भी आवारा पशुओं से परेशानी होती है। कई बार लोग सांडों से बचने के लिए सड़क के किनारे खड़े हो जाते हैं, जिससे यातायात व्यवस्था प्रभावित होती है। बुजुर्गों, बच्चों एवं महिलाओं के लिए यह समस्या और अधिक चिंता का विषय बनी हुई है। नगर पालिका प्रशासन से मांग की है कि मामले

यह कहते हैं पालिका सचिव

नगर पालिका के सचिव प्रशंत पाठशर ने बताया कि आवारा पशुओं की समस्या को लेकर जल्द ही नए टैंडर किए जाएंगे। इसके बाद दोबारा अभियान चलाकर आवारा पशुओं को पकड़ा जाएगा। कस्बे में लोगों को किसी प्रकार की परेशानी नहीं होने दी जाएगी और समस्या के समाधान के लिए आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। को गंभीरता से लेते हुए जल्द अभियान चलाया जाए। किसी बड़े हादसे का इंतजार करने के बजाय समय रहते बेसहारा पशु को कस्बे की सड़कों से हटाया जाना चाहिए। साथ ही पशुओं को सुरक्षित स्थान उपलब्ध करवाकर समस्या का स्थायी समाधान किया जाए।

सिहमा गोवंश उपचारशाला में अत्याधुनिक आईसीयू वार्ड का किया शिलान्यास

मंडी अटेली। बाबा खेतानाथ गोवंश उपचारशाला सिहमा में गायों के बेहतर उपचार एवं चिकित्सा सुविधाओं के लिए अत्याधुनिक आईसीयू वार्ड का शिलान्यास किया गया। महंत एतवारनाथ महाराज ने विधिवत पूजा-अर्चना के साथ आईसीयू वार्ड का शिलान्यास किया। अत्याधुनिक आईसीयू वार्ड के निर्माण से गंभीर रूप से बीमार एवं घायल गोवंश को बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी। साथ ही उपचारशाला में गोवंश की सेवा एवं उपचार को अधिक व्यवस्थित और आधुनिक बनाने की दिशा में यह महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। इस मौके पर श्रद्धालुओं एवं गोसेवकों ने पहल को सराहना करते हुए कहा कि गोवंश की सेवा के लिए आधुनिक चिकित्सा सुविधाएं समय की आवश्यकता हैं। आईसीयू वार्ड बनने के बाद गंभीर अवस्था में उपचारशाला पहुंचने वाले गोवंश की बेहतर निगरानी के साथ आवश्यक चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध हो सकेंगी। वहीं सिहमा स्थित यह गोवंश उपचारशाला बिना किसी सरकारी आर्थिक सहायता के नि:शुल्क भाव से गोमाता की सेवा एवं उपचार का कार्य कर रही है। इस मौके पर पूर्व सरपंच सुबेसिंह, देवीलाल, प्रवीण पुजारी महासर धाम, सत्यप्रकाश, डा. रोहतारा आर्य, अनिरुद्ध ठेंकेदार, अरुण, अजीत, नवीन, अमिषेक, चंदन, नरेंद्र, सोनू, मुकेश, गुरूप सहित अनेक श्रद्धालु एवं गोसेवक मौजूद रहे।



मंडी अटेली। सिहमा गोवंश उपचारशाला में शिलान्यास करते हुए। फोटो: हरिभूमि

शहीद हवलदार शीशराम यादव की पुण्यतिथि पर रक्तदान शिविर 15 को

मंडी अटेली। शहीद हवलदार शीशराम यादव की द्वितीय पुण्यतिथि के मौके पर 15 सितंबर को रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा, जिसमें मुख्य अतिथि भाजपा ओबीसी मोर्चा के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य एवं पूर्व सरपंच कुलदीप बौराड़िया होंगे। शिविर का आयोजन शगुन वाटिका नांगल में किया जाएगा। जानकारी देते हुए शहीद की बिराठा खूबस यादव ने बताया कि रक्तदान शिविर सुबह नौ बजे से दोपहर दो बजे तक चलेगा, जिसमें क्षेत्रवासियों से अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर रक्तदान करने की अपील की गई है। उन्होंने कहा कि एक यूनिट रक्त किसी जरूरतमंद की जिंदगी बचा सकता है। इसलिए रक्तदान कर शहीद को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करें।

भवनों के लिए खतरा बनी नाले की गहरी खुदाई, अदालत ने लगाई रोक

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ मंडी अटेली

अटेली के पुराने बस स्टैंड के पास पीडब्ल्यूडी रोड के साथ जल निकासी नाले के निर्माण के लिए की जा रही गहरी खुदाई पर नारनौल अदालत ने अगली सुनवाई तक रोक लगा दी है। सिविल जज (जूनियर डिवीजन) की अदालत ने यह आदेश अनुपमा सोनी पत्नी सुभाष सोनी बनाम म्यूनिसिपल कमेटी अटेली मंडी व अन्य मामले में 10 सितंबर को सुनाया। अदालत ने परियोजना स्थल की वादी पक्ष की ओर से प्रस्तुत तस्वीरों का अवलोकन करने के बाद प्रथम दृष्टया पाया कि जल निकासी व्यवस्था के निर्माण के लिए गहरी खुदाई की जा रही है। अदालत ने माता कि नाले के निर्माण के लिए खुदाई आवश्यक है, लेकिन यदि भवनों से सटी जमीन पर गहरी

खुदाई की जाती है तो इससे आसपास के भवनों को नुकसान पहुंचने की आशंका है। गंभीर स्थिति में भवन गिरने से जान-माल का नुकसान भी हो सकता है। इसी को ध्यान में रखते हुए अदालत ने प्रतिवादियों को अगली सुनवाई तक वादी के भवनों के पास आगे कोई खुदाई नहीं करने के निर्देश दिए हैं। हालांकि अदालत ने यह भी स्पष्ट किया है कि जहां पहले ही खुदाई हो चुकी है, वहां जल निकासी प्रणाली का निर्माण कार्य और जमीन को समतल करने का काम जारी रखा जा सकता है। मामले की सुनवाई के दौरान वादी की ओर से अधिवक्ता विवेक सोनी ने बताया कि अदालत ने प्रतिवादियों को लिखित बयान तथा निषेधाज्ञा आवेदन का जवाब दाखिल करने के लिए 21 सितंबर 2026 की तारीख निर्धारित की है।

विजयपाल के बार एसोसिएशन प्रधान बनने पर दुकानदारों ने बांटे लड्डू

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ नारनौल

जिला बार एसोसिएशन नारनौल के नवनिर्वाचित प्रधान विजय पाल एडवोकेट चुने जाने पर शहर के विभिन्न वर्गों में खुशी का माहौल है। इसी कड़ी में तरुण लैब गली स्थित सत्या प्लाजा बिल्डिंग के दुकानदारों ने शनिवार लड्डू बांटकर खुशी का इजहार किया और विजय पाल एडवोकेट को नई जिम्मेदारी मिलने पर बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। दुकानदारों ने एक-दूसरे को लड्डू खिलाकर खुशी साझा की और उनके सफल कार्यकाल की कामना की। इस अवसर पर दुकानदार जितेंद्र यादव, लक्ष्मण सिंह, महेश सैनी, अमर सिंह सैनी, बिट्टू निवाजनगरिया, राजू डेलर, सोनू सैनी, ओपी वर्मा व डै. राजकुमार सैनी ने कहा कि विजय पाल



नारनौल। विजयपाल एडवोकेट की जीत पर लड्डू बांटते दुकानदार। फोटो: हरिभूमि

एडवोकेट का वकालत के क्षेत्र में करीब चार दशक लंबा अनुभव है। इतने लंबे समय से न्यायिक क्षेत्र से जुड़े रहने के कारण उन्होंने अधिवक्ताओं के साथ-साथ जिला के आम लोगों के बीच भी अपनी अलग पहचान बनाई है। उन्होंने कहा कि विजयपाल एडवोकेट ने अपने कार्यकाल के दौरान हमेशा न्याय और सच्चाई को प्राथमिकता दी है। दुकानदारों ने कहा कि सही को सही और गलत को गलत कहना

विजय पाल एडवोकेट के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषता है। वह किसी भी विषय पर अपनी बात स्पष्ट और बेबाक तरीके से रखने के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने कहा कि बार एसोसिएशन के चुनाव में भी विजय पाल एडवोकेट को 36 बिरादरी से जुड़े अधिवक्ताओं का समर्थन मिला। यह समर्थन केवल एक चुनावी जीत नहीं, बल्कि उनके प्रति अधिवक्ता समाज के विश्वास और सम्मान को दर्शाता है।

जागरूकता किसी व्यक्ति या व्यापारी से पहले बातचीत कर उसका विश्वास जीतते हैं ठग

लालच का जाल बिछाकर मेहनत की कमाई पर डाका डाल रहे ठग

■ एसपी ने लोगों से विशेष सावधानी बरतने की अपील की

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ नारनौल

आमजन को अधिक लाभ, कम समय में दोगुना पैसा, सस्ते दाम पर महंगा सामान अथवा किसी विशेष व्यापारिक अवसर का लालच देकर ठगी करने के मामले लगातार सामने आ रहे हैं। कई मामलों में ठग किसी व्यक्ति या व्यापारी से पहले बातचीत कर उसका विश्वास जीतते हैं और इसके बाद आकर्षक लाभ का लालच देकर तत्काल पैसे देने अथवा ट्रांसफर करने के लिए दबाव

बनाते हैं। इसी प्रकार की बढ़ती घटनाओं को देखते हुए पुलिस ने आमजन को ऐसी मानवीय ठगी एवं लालच आधारित धोखाधड़ी के प्रति जागरूक करते हुए विशेष सावधानी बरतने की अपील की है। बता दें कि आजकल ठगी के कई मामलों में किसी विशेष तकनीक का इस्तेमाल नहीं किया जाता, बल्कि ठग अपनी बातचीत, व्यवहार और आकर्षक प्रस्ताव के माध्यम से सामने वाले का विश्वास जीतते हैं। इसके बाद उसे ऐसा

महसूस कराया जाता है कि यदि उसने तुरंत पैसा नहीं लगाया या भुगतान नहीं किया, तो वह बड़ा लाभ का अवसर खो देगा। इसी जल्दबाजी और लालच का फायदा उठाकर ठग लोगों से उनकी मेहनत की कमाई हड़प लेते हैं। हाल के दिनों में ऐसे कई मामले सामने आए हैं, जिनमें अलग-अलग वस्तुओं एवं व्यापारिक अवसरों के नाम पर लोगों को आकर्षक लाभ का लालच देकर ठगी की गई। कछुए के नाम पर, कांच की ट्यूब के नाम पर

तथा विशेष प्रजाति के चूहे के नाम पर रुपये की ठगी किए जाने जैसे अनेक मामले सामने आए हैं। इसी प्रकार सोलर प्लेट के सोलर स्ट्रक्चर तथा खाद-बीज भंडार के लाइसेंस के नाम पर भी लोगों को विश्वास में लेकर पैसे ऐंठने के मामले सामने आए हैं। ऐसे मामले यह दर्शाते हैं कि ठग अलग-अलग वस्तुओं, सेवाओं और व्यापारिक अवसरों को माध्यम बनाकर लोगों को अपने जाल में फंसाने का प्रयास कर रहे हैं।

जल्दबाजी में न करें कोई भी भुगतान

एसपी दीपक कुमार ने कहा कि ठग अक्सर पहले सामान्य बातचीत के माध्यम से व्यक्ति की जरूरत और रुचि को समझते हैं तथा इसके बाद उसे अत्यधिक लाभ का लालच देते हैं। कई बार ठग यह कहते हैं कि अभी भुगतान करना होगा, यह अवसर थोड़े बचे के लिए है, किसी और को बताना नहीं, आज ही पैसा लगाने पर अधिक लाभ मिलेगा या अभी भुगतान नहीं किया, तो योका किसी और को मिल जाएगा। इस प्रकार व्यक्ति को सोचने, संस्था या व्यापारिक प्रस्ताव के आधार पर केवल विश्वास अथवा लालच में आकर न दें। यदि कोई व्यक्ति कम समय में अधिक लाभ, दोगुने पैसे, असामान्य रूप से सस्ते दाम या किसी विशेष व्यापारिक अवसर का लालच देकर तत्काल पैसे देने के लिए कहता है, तो पहले उसकी पूरी सत्यता और विश्वसनीयता की जांच करें। जल्दबाजी में लिया गया आर्थिक निर्णय आपकी वर्षों की मेहनत की कमाई को नुकसान पहुंचा सकता है।





आवरण कथा
यामिनी गजानन रामपल्लीवार

भाषा और संस्कृति का रिश्ता कोई ऊपरी बंधन मात्र नहीं होता, वह जड़ और वृक्ष का रिश्ता होता है। हिंदी के संदर्भ में यह बात और भी गहरे अर्थ रखती है, क्योंकि हिंदी केवल संवाद का माध्यम नहीं, हिंदुस्तान की सांस्कृतिक पहचान का जीवंत प्रमाण है। इसकी जड़ें संस्कृत जैसी वैज्ञानिक और अनुशासित भाषा में हैं, जिसने भोजपुरी, अवधी और ब्रज जैसी सैकड़ों बोलियों को अपनी सुंदर शाखाओं की तरह जन्म दिया। यह विस्तार किसी एक भाषा की सीमा नहीं, बल्कि एक पूरे उपमहाद्वीप की सांस्कृतिक चेतना का फैलाव है।

भाषा से जुड़ी देश की पहचान

14 सितंबर को जब हम हिंदी दिवस मनाते हैं, तो यह अवसर केवल एक तिथि का उत्सव नहीं होना चाहिए। यह अवसर रुककर यह सोचने का भी हो कि हमने इस भाषा को कितना जिया है और कितना केवल औपचारिकता में समेट दिया है? इतिहास गवाह है कि जब कवि इकबाल ने लिखा था, 'हिंदी हैं हम, वतन है हिंदोस्त' हमारा।' तब उन्होंने भाषा और राष्ट्र की पहचान को एक ही सांस में बांध दिया था। उनकी यह पंक्ति आज भी उतनी ही सार्थक है, क्योंकि जिस भाषा की पहचान हिंद महासागर के तट से लेकर हिमालय की चोटियों तक फैली हो, वह भाषा किसी परिचय की मोहताज नहीं।

शब्दों में सदियों की साधना

हिंदी का यह वैभव किसी एक कवि या रचनाकार की देन नहीं, बल्कि सदियों की साधना का परिणाम है। तुलसी ने इसे भक्ति की मिठास दी, सूर ने इसमें वात्सल्य का रस घोला, कबीर ने इसे सीधी और निर्भीक वाणी दी और निराला ने इसमें विद्रोह और नवीनता का स्वर भरा। इन सबने मिलकर हिंदी को वह समृद्धि दी, जो आज भी हर हिंदुस्तानी की रग-रग में बहती है। यही कारण है कि हिंदी को केवल एक भाषा कहना उसके साथ अन्याय होगा, वह तो भावनाओं की वह साझी विरासत है, जिसमें देश की विविधता खुद को सहज पाती है।



कविता
अलका 'सोनी'

जन-मन में बसती है हिंदी

किताबों के पन्नों पर पढ़े जाने से पहले, भाषणों में, कहीं सुने जाने से पहले, गुंजी थी वो मेरे कानों में। जैसे गुंजी थी अभिमान्यु के कानों में चक्रव्यूह भेदने की कला। फिर अकसर गुंजती री री रही वो, मां की आवाज में। लोरी में, और पिता की डांट में छिपे दुलार में भी। और उनके कई अनकहे भय के बीच, लौलसा देने वाले संसार में भी। उसने तब भी गले लगाया था मुझे जब मैं नहीं जानती थी उसके व्याकरण का कोई नियम। क्योंकि यह उसके और मेरे बीच के

उन रिश्तों की गर्माहट है, जिन्हें परिभाषित नहीं कर सकता कोई शब्दकोश। वो मेरे आंगन में बिखरी सुबह की धूप है। सर पर बनी रहने वाली, ममता की छांव है। दादी की कलनी में हर बार आता हुआ कोई पुराना गांव है। वो और कोई नहीं मेरी हिंदी है। जिसमें बसी है कबीर की निर्भीकता, तुलसी की लोक-गंध की खुशबू प्रेमचंद के पागों का संघर्ष, महादेवी की करुणा, और निराला की विद्रोही चेतना। क्योंकि मेरी हिंदी ने बनाया है राजमहलों से अधिक जन-मन में अपना घर।

विशेष: हिंदी दिवस, 14 सितंबर

हर साल 14 सितंबर के आस-पास सरकारी दफ्तरों में हिंदी पखवाड़ा शुरू होता है, मंचों से हिंदी की महिमा गाई जाती है और अपनी भाषा पर गर्व करने की बातें होती हैं। लेकिन इन औपचारिकताओं से आगे बढ़कर हमें यह सवाल भी पूछना चाहिए कि क्या हम अपनी रोजमर्रा के जीवन में हिंदी को सचमुच सम्मान देते हैं? उससे प्यार करते हैं?

हमारे हिंदुस्तान की आत्मा है हिंदी

समावेशी भाषा है हिंदी

यह भी ध्यान रखना जरूरी है कि हिंदी की श्रेष्ठता का यह अर्थ कभी नहीं कि अन्य भाषाओं या बोलियों को कमतर आंका जाए। हिंदी का असली गौरव इसी में रहा है कि उसने सदा दूसरी भाषाओं और बोलियों को अपनाया, उनसे शब्द लिए और उन्हें भी फलने-फूलने का अवसर दिया। भोजपुरी, अवधी, ब्रज, मैथिली और राजस्थानी जैसी बोलियां हिंदी की प्रतिद्वंद्वी नहीं, उसकी शक्ति हैं। इसी समावेशी स्वभाव के कारण हिंदी हर हिंदुस्तानी के मन में अपना स्थान बना पाई है।

कहां हैं झिझक की जड़ें

यह विदंबना ही है कि आज कुछ लोगों को हिंदी बोलते हुए झिझक या कमतरी का एहसास होता है। यह झिझक कहां से आती है, इस पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है। बड़े शहरों के कॉर्पोरेट



कार्यालयों में, महानगरों की पार्टियों में और यहां तक कि कुछ शिक्षित परिवारों में भी हिंदी बोलने को पिछड़ेपन से जोड़कर देखा जाने लगा है। अंग्रेजी में दक्षता आवश्यक है, इसमें कोई संदेह नहीं, क्योंकि वह आज वैश्विक संपर्क की भाषा बन चुकी है। परंतु किसी दूसरी भाषा को

सीखने और अपनी भाषा को त्यागने में बुनियादी अंतर है। जब यह अंतर धुंधला पड़ने लगता है, तभी भाषा का यह संकट जन्म लेता है। बरसों पहले मेरे एक पारिवारिक समारोह में एक किशोर अपनी दादी से अंग्रेजी में बात करने की कोशिश करने लगा, टूटे-फूटे शब्दों में, केवल इसलिए कि साथ बैठे उसके अंग्रेजी-माध्यम के मित्र उसे 'देसी' न समझें। दादी ठहरकर मुसकुराई और बोलीं, 'बेटा, जिस भाषा में मैंने तुझे कहानियां सुनाईं, उसी में बात कर, शर्म किस बात की?'

उस किशोर की दादी के एक वाक्य ने पूरा वातावरण बदल दिया। गहराई से सोचें तो स्पष्ट होता है, वह झिझक केवल उस बच्चे की नहीं थी, वह उस पूरी पीढ़ी की झिझक थी, जिसे यह सिखाया गया कि तरक्की अंग्रेजी की जुबान से होकर गुजरती है और अपनी भाषा पीछे छूट जाने वाली चीज है। यह संकट केवल

भाषाई नहीं, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक भी है। जो व्यक्ति अपनी मातृभाषा बोलने में संकोच करता है, वह धीरे-धीरे अपनी जड़ों से भी दूर होता चला जाता है। हमें इस बात को समझना होगा कि भाषा केवल शब्दों का संग्रह नहीं होती, वह सोचने की एक शैली होती है, संस्कारों की आगे बढ़ाने का माध्यम होती है। जब बच्चा अपनी दादी की कहानियां, लोरियां हिंदी में नहीं सुन पाता, जब वह लोकगीतों की लय से अपरिचित रह जाता है, तो वह केवल एक भाषा नहीं खोता, अपने भीतर की एक पूरी दुनिया खो देता है।

सभी करें हिंदी का सम्मान

यह कहना उचित होगा कि भाषा का अपमान केवल उस भाषा का अपमान नहीं, वह पूरी संस्कृति का अपमान है। जिस तरह किसी वृक्ष की जड़ों को काटकर उसकी शाखाओं की हरियाली की उम्मीद नहीं की जा सकती, उसी तरह अपनी भाषा से कटकर अपनी सांस्कृतिक पहचान को जीवंत रखने की कल्पना भी अधूरी रह जाती है। यह प्रवृत्ति बदलनी चाहिए और इसके लिए किसी बड़े आंदोलन की नहीं, बल्कि छोटे-छोटे व्यावहारिक प्रयासों की आवश्यकता है। घर के भीतर बच्चों से हिंदी में बात करना, कार्यस्थल पर जहां संभव हो वहां हिंदी को सहजता से अपनाना, हिंदी साहित्य को केवल पाठ्यक्रम की मजबूरी न मानकर आनंद के लिए साहित्यिक किताबें पढ़ना, ऐसे ही अनेक छोटे-छोटे प्रयास मिलकर बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं।

संकल्प लेने का दिन हिंदी दिवस

आज जब हिंदी दिवस के अवसर पर सरकारी कार्यालयों में औपचारिक समारोह होंगे, भाषणों में हिंदी की महिमा गाई जाएगी, तब यह प्रश्न स्वयं से पूछना जरूरी है कि क्या हमने इस भाषा को अपने दैनिक जीवन में उताना सम्मान दिया, जितना वह हकदार है। हिंदी को बचाने की जिम्मेदारी किसी एक दिन या किसी एक विभाग की नहीं, बल्कि हर उस व्यक्ति की है, जो इसे अपनी भाषा मानता है। हिंदी दिवस केवल स्मरण का दिन नहीं, संकल्प का दिन बने, यही आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। जब तक हम अपनी भाषा बोलने में गर्व का अनुभव नहीं करेंगे, तब तक उसकी समृद्ध विरासत आगे नहीं बढ़ पाएगी। इसलिए आइए, इस हिंदी दिवस पर केवल उत्सव नहीं, आत्मनिरीक्षण भी करें और अपनी भाषा को उसका वास्तविक सम्मान लोटाएं। *

लंग्य / गोविंद भारद्वाज

सरकार जब नई आती है तो रुतबा जमाने के लिए और आमजन में भरोसा कायम करने के लिए यह आदर्श वाक्य दोहराती है कि हमारी सरकार में कोई गड़बड़ी बर्दाश्त नहीं होगी। लेकिन धीरे-धीरे जाए-जाए तरीके से गड़बड़ी आरंभ हो जाती है।

गड़बड़ी बर्दाश्त नहीं



लुटेरों, बदमाशों, उठाईगीरों या जमाखोरों, भ्रष्टाचारियों, लामपरवाहों, रिश्ततखोरों, बलात्कारियों या मिलावटखोरों के लिए चेतावनी दी गई या आम नागरिकों के लिए। खैर यह जुमला असरदार हो न हो पर लोगों को दिलासा दिलाए रखने के लिए कहना जरूरी है। हालांकि गड़बड़ी करता कौन है, ये विषय शोध का है। *

परीक्षा

हो जाया करती थी। ऐसे में उन्हें दो दिनों तक पूरा आराम करना पड़ता था। ट्रेन ने रात के एक बजे अंबाला पहुंचना था। मुझे डर लग रहा था कि सर्दी की ठिठुरती रात में इस समय में पापा को संभाले हुए सुरक्षित घर तक कैसे पहुंचूंगी? घर से स्टेशन पर किसी को बुलाया भी नहीं जा सकता था। न मम्मी को और न छोटी बहन को। अंबाला के प्लेटफॉर्म पर ट्रेन रुकी तो मैंने सहारा देकर पापा को डिब्बे से नीचे उतारा। फिर सहारा देकर उन्हें स्टेशन से बाहर ले आई। पापा निकले से थे।

स्टेशन के बाहर पांच-सात ऑटो-रिक्षा खड़े थे, जिनके ड्राइवर कपड़े से मुह, सिर ढंके स्टेशन से बाहर आती सवारियों से उनके गंतव्य के बारे में पूछ रहे थे। ऐसे किसी ड्राइवर से बात करने में भी मुझे डर लग रहा था। तभी न जाने कैसे मुझमें इतनी हिम्मत आ गई कि एक ड्राइवर को मैंने बड़ी आत्मविश्वास भरी रीबदार आवाज में शंकर नगर चलने के लिए कहा और पापा के साथ ऑटो-रिक्षा में बैठ गई। मुझे लगा पुलिस इम्पेक्टर की परीक्षा से पहले ही असली परीक्षा मैंने पास कर ली है। *

-हरिश कुमार 'अमित'

विशेष: गणेश चतुर्थी

परंपरा-आस्था का संगम महापर्व गणेशोत्सव



सांस्कृतिक पर्व / शिखर चंद जैन

गणेश चतुर्थी का त्योहार भारतीय जनमानस के हृदय में अत्यंत पवित्र स्थान रखता है। यद्यपि भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी (14 सितंबर) को विघ्नहर्ता भगवान श्री गणेश की स्थापना और अनंत चतुर्दशी को उनके विसर्जन का दृश्य हर वर्ष भारत के कोने-कोने में दिखाई देता है, परंतु इस महापर्व के कई ऐसे पहलू हैं, जो बहुधा लोकस्मृति या सामान्य वार्ताओं से परे छूट जाते हैं। यह उत्सव केवल धार्मिक कर्मकांड, ढोल-नगाड़ों और सुंदर झांकियों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके मूल में राजनीति, समाज, प्राचीन भूगोल, खगोल विज्ञान और पर्यावरण संरक्षण की गहरी जड़ें जुड़ी हुई हैं। गणेश चतुर्थी भारत की उस अमर सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक है, जो अध्यात्म को समाज सेवा से, इतिहास को भविष्य की सोच से और धर्म को पर्यावरण संरक्षण से जोड़ती है।

तिलक की दूरदर्शी सामाजिक पहल: गणेश चतुर्थी का इतिहास अत्यंत प्राचीन है और 18वीं शताब्दी में पेशवाओं के काल में इसे पुणे में राज्योत्सव के रूप में मनाया जाता था। आधुनिक भारत में इसका स्वरूप पूरी तरह से बदलने का श्रेय लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक को जाता है। वर्ष 1893 में तिलक ने इसे निजी गृह-पूजा के बंद कमरों से निकालकर 'सार्वजनिक गणेशोत्सव' का रूप दिया। ब्रिटिश हुकूमत के दौर में 'वर्नाकुलर प्रेस एक्ट' और अन्य कठोर कानूनों के कारण भारतीयों के लिए राजनीतिक सभाएं करना या सामाजिक मुद्दों पर एकत्र होना पूरी तरह प्रतिबंधित था। तिलक ने भांप लिया कि अंग्रेज शासक धार्मिक सम्मेलनों में सीधे हस्तक्षेप करने से डरते हैं। अतः उन्होंने गणेशोत्सव को एक सांस्कृतिक और सामाजिक मंच बनाया। पंडालों में स्वतंत्रता संग्राम के विचारों, स्वदेशी आंदोलनों और समाज सुधारों पर चर्चा होने लगी। इस प्रकार, एक धार्मिक उत्सव औपनिवेशिक सत्ता के खिलाफ जनक्रांति का प्रतीक बन गया।

जल निकायों का वैज्ञानिक कायाकल्प:

गणेश चतुर्थी से आरंभ होने वाला गणेशोत्सव केवल धार्मिक पर्व नहीं है। इसकी जड़ें भारत की परंपरा, इतिहास और संस्कृति से भी जुड़ी हैं। इस पर्व का आरंभ सामाजिक समारोहों के रूप में कब और कैसे हुआ, आप जरूर जानना चाहेंगे।

आधुनिक समय में विसर्जन के कारण होने वाले जल प्रदूषण पर चिंता व्यक्त की जाती है, लेकिन पुराने दौर में गणेश प्रतिमा का निर्माण और उसका जल-विसर्जन एक अत्यंत वैज्ञानिक और पर्यावरणीय प्रक्रिया थी। पारंपरिक रूप से, गणेश प्रतिमाएं केवल शुद्ध चिकनी मिट्टी (शाड़ू माटी) से बनाई जाती थीं। इसमें हल्दी, चंदन, भस्म और कुमकुम का लेप किया जाता था। मानसून के अंत में जब नदियां और तालाब नए पानी से भर जाते थे, तब इन मिट्टी की मूर्तियों को जल में विसर्जित किया जाता था। मिट्टी, जल निकायों के समृद्ध करती थी, जबकि हल्दी और चंदन प्राकृतिक एंटीसेप्टिक तथा जीवाणुरोधक के रूप में पानी को शुद्ध करते थे। यह प्राचीन परंपरा वास्तव में वर्षा ऋतु के बाद जल स्रोतों के वैज्ञानिक कायाकल्प का माध्यम थी।

मोदक का औषधीय महत्व: गणेश जी को 'मोदक प्रिय' कहा जाता है, लेकिन मोदक केवल एक स्वादिष्ट मिठाई नहीं है। इसका निर्माण आयुर्वेद के सिद्धांतों पर आधारित है। पारंपरिक रूप से भाद्रपद (सितंबर) के महीने में उकड़ीचे मोदक (भाप में पके हुए मोदक) बनाए जाते हैं। मानसून के खत्म होने और शरद ऋतु के आगमन के समय शरीर में 'पित्त' दोष बढ़ने की संभावना होती है। मोदक के बाहरी आवरण में चावल का आटा और अंदर गुड़, ताजा कसा हुआ नारियल, जायफल और इलायची का मिश्रण होता है, जिसे शुद्ध देशी घी के साथ परोसा जाता है। नारियल और गुड़ पेट की अग्नि को शांत करते हैं और पाचन तंत्र को दुरुस्त रखते हैं। इस तरह मोदक का भोग ऋतु परिवर्तन के दौरान स्वास्थ्य की रक्षा करने वाला एक आयुर्वेदिक आहार है।

समृद्ध करे सांस्कृतिक परिदृश्य: भारत के कला और सांस्कृतिक परिदृश्य को समृद्ध करने में गणेशोत्सव ने एक 'अदृश्य अकादमी' के रूप में भूमिका निभाई है। 10 दिनों तक चलने वाले इस उत्सव में सार्वजनिक पंडालों द्वारा संगीत संध्याएं, नाटक (नाट्य संगीत), लोककलाएं (जैसे लावणी, गोंधल) और नृत्य प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। इस तरह इसका सांस्कृतिक महत्व भी है। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान गूण

संगीतमय जीवन

विख्यात खयाल गायिका गंगूबाई हंगल की आत्मकथा कई वर्ष पहले कन्नड़ भाषा में प्रकाशित हुई थी। हाल में ही उसका हिंदी अनुवाद 'जीवन संगीत' शीर्षक से प्रकाशित होकर आया है। यह आत्मकथा सामाजिक उपेक्षाओं, पारिवारिक समस्याओं और आर्थिक संकटों के बीच रहकर संगीत को समर्पित एक कलाकार की साधना यात्रा है। गंगूबाई हंगल ने कई स्थलों पर स्वीकार किया है कि उनकी मां के त्याग और उनके गुरुओं के सही मार्गदर्शन ने ही उन्हें इतनी प्रतिष्ठा दिलाई। यही नहीं वे पूरी विनम्रता से हर उस शख्स के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती दिखाई देती हैं, जिन्होंने किसी भी रूप में उनकी संगीत साधना में जरा भी सहयोग प्रदान किया था। हालांकि कुछ स्थलों पर उनके मन में समाई टीस प्रकट हुई है। जातिगत भेदभाव पर अपने अतीत की याद करते हुए वह कहती हैं, 'अगर हम लोग किसी ऊंची जाति के घर खाना खाने जाते थे तो हमें खुद अपने बर्तन मांजने पड़ते थे।' किशोरावस्था में ही विवाह कर दिए जाने और उसके कुछ समय बाद ही मां-पिता के निधन होने के बावजूद गंगूबाई ने कभी अपनी संगीत साधना में व्यवधान नहीं आने दिया। इसी का परिणाम रहा कि वे हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में उपलब्धियों के सोपानों पर अग्रसर रही और अद्वितीय प्रतिष्ठा प्राप्त की। इस आत्मकथा में कहीं भी आत्मश्लाघा का भाव नजर नहीं आता है। वे अपने सभी प्रशंसक संगीत प्रेमियों, विभिन्न सम्मानों से नवाजने के लिए सरकार के प्रति कृतज्ञता भी ज्ञापित करती हैं। *

पुस्तक: जीवन संगीत- गंगूबाई हंगल (आत्मकथा), अनुवाद: मृत्युंजय, मूल्य: 199 रुपये, प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

ख़ाका

लघुकथाएं

अविनाश पुलिस महकमे का वरिष्ठ स्केच आर्टिस्ट था। उसके हाथों से बने ख़ाके कभी गलत नहीं होते थे। एक शाम, एक सहमी हुई बुजुर्ग महिला उसके घर में हुई डकेती के गवाह के तौर पर एक शख्स का हुलिया बताने पहुंची। अविनाश ने कागज पर पेंसिल टिकाई। जैसे-जैसे महिला उस शख्स के माथे के कंठे निशान, तीखी नाक और गहरी आंखों का ब्योरा देने लगी, अविनाश की अंगुलियां कांपने लगीं। कैनवास पर उसके अपने इकलौते बेटे का चेहरा उभर रहा था। अविनाश के भीतर भयंकर द्वंद छिड़ गया, एक कलाकार की निष्ठा और बाप के मोह के बीच। क्या वह लकीरों को बदलकर अपने बेटे को बचा ले? उसने भारी मन से, बिना कोई हेर-फेर किए बिल्कुल हूबहू वैसा चेहरा उकेरा, जैसा महिला ने बताया था और ड्राइंग शीट पुलिस अप्रसर की ओर बढ़ा दिया। तभी महिला स्केच देखकर रोते हुए बोली, 'हां साहब! यही वो जीवांज लड़का है, जिसने डकेती से भिड़कर मेरी जान बचाई। अस्पताल में बेहोश पड़ा है, इसके घर खबर करवा दो।' अविनाश की कांपती अंगुलियों से पेंसिल छूटकर गिर गई। *

-देवेंद्रराज सुथार

मराठी संस्कृति का प्रभाव